Rohtas Mahila College, Sasaram. 28.06.21
Dr. Aman Murmu, Dept of Psychology, B.A. Part I H, AI-I

(रचनात्मक चिंतन की अवस्थाएँ - Topic)

स्रष्टाओं (creators) के विश्लेषण से पता चला है कि रचनात्मक क्रियाएं काफी वैयक्तिक होती है, फिर भी रचनात्मक चिंतन की कुछ निश्चित अवस्थाएँ है जो सभी स्रष्टाओं में देखी जाती है। यह चिंतन कई अवस्थाओं से गुजरता है। हेल्महोल्ज (Helmholtz, 1896) ने पहली बार ध्यान दिया। उन्होंने अन्तः निरीक्षण विधि द्वारा मौलिक समस्या का उत्तर ढूंढते समय अपनी ही चिंतन प्रक्रिया का अध्ययन किया। उन्होंने देखा कि जब समस्या हल न हो सकी तो कुछ दिनों के लिए उसे छोड़ दिया, विश्राम के बाद समस्या का समाधान अकस्मात मिल गया। इसी तरह Poincare, 1913 ने भी देखा कि रचनात्मक चिंतन में प्रबोधन (Illumination) की अवस्था पाई जाती है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि प्रबोधन के पहले अचेतन क्रिया जारी रहती है। दूसरे शब्दों में प्रबोधन वास्तव में अचेतन मस्तिष्क का परिणाम है। इस संबंध में Wallas, 1926 का अध्ययन काफी महत्वपूर्ण है। उन्होंने अपने अध्ययन के आधार पर रचनात्मक चिंतन की निम्नलिखित चार अवस्थाओं का उल्लेख किया है।

(i) आयोजन (preparation) - रचनात्मक चिंतन की पहली अवस्था आयोजन है। इस तैयारी का उद्देश्य भिन्न-भिन्न धारणाओं के बीच संगठन स्थापित करना होता है। न्यूटन ने पेड़ से जमीन पर गिरते हुए फलों को देखा। उसने परिकल्पना (Hypothesis) बनाई की कि जमीन में चीजों को अपनी ओर खींचने की शक्ति है। उसने इसके लिए प्रमाणों तथा तथ्यों को जमा करने का आयोजन या तैयारी की। आयोजन की यह अवस्था प्रत्येक रचनात्मक कार्य में देखी जाती है। अंतर केवल इतना होता है कि कभी यह अवस्था लम्बे समय तक जारी रहती है और कभी जल्दी समाप्त हो जाती है। यह बात समस्या की जटिलता तथा स्रष्टा की योग्यता पर निर्भर करती है।

Scanned with CamScanner

(ii) उद्भवन (incubation) - रचनात्मक चिंतन की इस अवस्था में व्यक्ति निष्क्रिय हो जाता है। वह समस्या को हल करने का प्रयास छोड़ देता है और विश्राम करने लगता है, जो जाता या किसी दूसरे काम में लग जाता है। यह अवस्था तब आती है जब कि कोशिश करने पर भी समस्या का कोई समाधान नहीं मिल पाता है। वैलेस ने अधिकांश परिस्थितियों में निष्क्रियता की इस अवस्था को देखा। वैलेस के अनुसार यह अवस्था आयोजन के बाद ही घटित होती है। यह अवस्था कभी तो अधिक समय तक और कभी थोड़े समय तक रहती है। इसमें व्यक्तिगत अन्तर देखे जाते हैं।

(iii) प्रबोधन (illumination) - रचनात्मक चिंतन की तीसरी अवस्था में अकस्मात समस्या का समाधान मिल जाता है। यह अवस्था उद्भवन के बाद घटित होती है। उद्भवन की अवस्था में व्यक्ति अपनी समस्या को चेतना से हटा देता है और दूसरे कार्यों में लग जाता है। कुछ समय बाद जब वह उस समस्या के प्रति सचेत होता है तो उसे लगता है कि अचानक उस समस्या का समाधान मिल गया है। गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिकों के साहित्य में इसे सूझ कहा जाता है।

(iv) प्रमाणीकरण (verification) - रचनात्मक चिंतन की चौथी अवस्था में प्रबोधन की अवस्था से प्राप्त समाधान की जाँच की जाती है। व्यक्ति प्रबोधन की अवस्था में जो सूझ प्राप्त करता है, उसकी जाँच करके देखता है कि वह ठीक है या नहीं अर्थात् इस परिकल्पना की जाँच की अवस्था कह सकते हैं। न्यूटन को यह सूझ हुई कि जमीन में वस्तुओं को खींचने की शक्ति है। उसने उसकी जाँच की और तब गुरुत्वाकर्षण का नियम निकाला।

Scanned with CamScanner